No. of Printed Pages : 4

BHDE-141

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2022

बी. एच. डी. ई.-141 : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) घर छूटे, दर छूटे, छूट गए लोग-बाग
कुछ प्रश्न पीछे पड़े थे, वे भी छूटे !
छूटती गई जगहें
लेकिन, कभी भो तो नेलकटर या कंघियों में
फँसे पड़े होने का एहसास नहीं हुआ !

(ख) खुदी में आकार तुम्हीं ने इनको शहर बदर
भी करा दिए हैं।
ये ऊँचेपन के गुरूर कब तक तुम्हारे
दिल में भरे रहेंगे ?
इन्हीं की हस्ती मिटाने वालो,
मिटोगे आखिर इन्हीं के आगे।

(ग) अर्थ सामाजिक प्राणी के जीवन में कितना महत्त्व रखता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। इसकी उच्छृंखल बहुलता में जितने दोष हैं वे अस्वीकार नहीं किये जा सकते, परन्तु इसके नितांत अभाव में जो अभिशाप हैं वे भी उपेक्षणीय नहीं।

(घ) मेघा और मगर गोह, साँप मूस खाई हम,
करी गिलहरिया शिकार।
कुकुरा के साथ धाई जुठली पतरिया पै,
पेटवा है पपिया भंडार॥

(ङ) उस घर से मत जोड़ना मेरा रिश्ता
जिस घर में बड़ा-सा खुला आँगन न हो
मुर्गे की बाँग पर जहाँ होती ना हो सुबह
और शाम पिछवाड़े से जहाँ
पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखे।

(च) जो काटते खुद हैं जड़ को अपनी
फल के चाखने की आस करते।
तुम्हीं बताओ वह कैसे जीवित
औ लहलहाते हरे रहेंगे ?
जो चाहते हो कि शक्तिशाली हो एक दुनिया का देश भारत
तो रोटी-बेटी से फिर 'हरिहर' कहो तो कब तक फिरे रहेंगे ?

2. 'दलित' को परिभाषित करते हुए इस पर अपने विचार व्यक्ति कीजिए। 16

3. स्त्री विमर्श के अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 16

4. आदिवासी साहित्य की प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। 16

5. 'सलाम' कहानी की मूल संवेदना को अपने शब्दों में लिखिए। 16

6. 'धूणी तप तीर' के कथानक का विवेचन कीजिए। 16

7. 'धूणी तप तीर' के आधार पर आदिवासियों की सांस्कृतिक समस्याओं पर प्रकाश डालिए। 16

8. 'व्यक्तित्व की भूख' की अंतर्वस्तु पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। 16

9. नवजागरण युग में स्त्रियों की स्थिति की समीक्षा कीजिए। 16